द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

विवाह के गीत

(ख) विवाह के गीत - जब बालक युवा हो जाता है तो गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु उसका विवाह करवाया जाता है। विवाह दो हृदयों के मिलन की सामाजिक स्वीकृति है। विवाह के पूर्व सगाई होती है, जिसमें कन्या पक्ष वाले वर के तिलक कर शकुन के तौर पर नारियल, गुड़, मिठाई, चाँदी का सिक्का देते हैं तथा परिवार के बड़े-बुजुर्गों को सामाथ्र्यानुसार रुपये, कपड़े आदि देते हैं। विवाह के कुछ दिनों पहले मूंग उछालना अथवा पाँच धान बिखेरने की रस्म होती है, जिसमें परिवार की औरतें व आस-पड़ोस की औरतें मूंग आदि अनाज साफ करते हुए गीत गाती हैं फिर उन्हें मांगलिक गुड़, बताशे दिए जाते हैं। शुभ दिन शुभ घड़ी देखकर गणेश जी की स्थापना की जाती है। फिर वर-वधू को ’बाने‘ पाट बिठाया जाता है। पीठी (उबटन) चढ़ाई जाती है ताकि वर वधु का रंग हल्दी की तरह निखर उठे। इस अवसर पर मंगल गीत गाया जाता है -

 म्हारी हल्दी रे रंग सुरंग, निपजै मालवे

 मौलावै सगुनाबाई रा भाभोसा

 माताजी रै मन रलै।

 वांरा माताजी चतुर सुजान, केसर केवरे।

 बना थे हो केसर जोग, हल्दी अंग चढै।

 पाट बिठाने के दिन से लेकर विवाह की पूर्व सन्ध्या तक ’बना-बनी‘ गीत गाए जाते हैं। इनमें वर-वधु की हँसी-ठिठोली परिवार के बड़े-बुजुर्ग का लाड़ दुलार आदि झलकता है। कन्या के घर पर ’कामण‘ विशेष रूप से गाया जाता है। कामण अर्थात् वशीभूत करना। इस गीत में कन्या को अमर सुहाग का आशीर्वाद देते हुए यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने रूप शृंगार, आचरण और मधुर व्यवहार से ससुराल वालों को वशीभूत कर ले -

 सुहाग मांगण चाली, आपरै दादोसा रै आगे

 दादोसा देवो नी सुहाग, बाई सुगना नै सुहाग

 ऐ बाई म्है क्या जाणंू कामण घुल-घुल रह्यो

 इन्दली-बिन्दली में घुल रह्यो

 काजल टीकी में घुल रह्यो

 मेंहदी गोली में घुल रह्यो

 ऐ बाई म्हें क्या जाणू कामण घुल-घुल रह्यो।

 राजस्थान में ’मायरा भरना‘ की परंपरा है। सन्तान के विवाह पर माँ के पीहर से भाई कपड़े, गहने, रुपये, मिठाई आदि गाजे-बाजे के साथ लाता है। वर या वधु का मामा चूड़ा-चूंदड़ी लाता है। इस परंपरा का निर्वाह करने हेतु बहिन अपने भाई की प्रतीक्षा करती है कि वह शीघ्र आकर मायरा भरे -

 वीरा थे आइजो भावाज लाइजो

 सिरदार भतीजा उमराव भाणेजा

 साथे लाइजो जी ओ वीरा

 रिमक-झिमक होय आइजो

 वीरा माथै ने मेंमद लाइजो

 म्हारै रखड़ी रतन जड़ाइजो

 जी ओ वीरा रिमक-झिमक होय आइजो।

 इसी तरह चाक-पूजा, उखड़ी पूजन, रोड़ी पूजन, सेवरा (मोड़), वर निकासी, पाणिग्रहण, विदाई, कुलवधू के स्वागत के अवसर पर भी गीत गाए जाते हैं।

(स) मृत्यु संस्कार के गीत - जीवन की अटल सच्चाई वृद्धजनों की मृत्यु पर भी गीत गाए जाते हैं। बारह दिन तक भजन-कीर्तन होता है। इन शोकगीतों व भजनांे में संसार की क्षणभंगुरता, जीवन की नश्वरता के उपदेश होते हैं। मृत्यु पर ’हर का हिंडौला‘ गाया जाता है।

 हर हर करता वडेरा थे उठ हालिया

 कोई तुलछा री माला थारै हाथ

 बेटां जी देवै थारे परिक्रमा

 कोई पोताजी करै डंडोत

 जी ओ बड़भागी थारै हर रो हिंडोलो

 सदा रंग रै हालै।